IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ग्रामीण महिलाओं की जीवन शैली पर मोबाइल का प्रभाव

डॉ. सरोज नैनिवाल
सह आचार्य–समाजषास्त्र,
राजकीय महाविद्यालय, गुढ़ा, झुन्झुनू (राज.)

डॉ. सुभाष चन्द्र
सहा. आचार्य–इतिहास
राजकीय कन्या महाविद्यालय, गुड़ा, झुन्झुनू (राज.)

सारांश

ग्रामीण महिलाओं का मोबाईल के प्रति आकर्षण अधिक देखा गया है। मोबाईल ने ग्रामीण महिलाओं की जीवन शैली पर एक अमिट छाप छोड़ी है। जनसंचार साधनों में अन्य साधनों की अपेक्षा मोबाईल लोकप्रियता अधिक है। वर्तमान में यह जनसंचार का सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम बनकर उभरा है। मोबाईल के आने से पहले ग्रामीण महिलाओं का जीवन परिवार पर ही केन्द्रित था। महिलाएँ घर के सभी कामों में निपुण हुआ करती थी। वे विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम, त्यौहार आदि का संचालन स्वयं स्वविवेक से करने में समर्थ थी। वे परिधानों, आभूषणों से सुसज्जित रहती थी। ग्रामीण महिलाएँ स्वयं ही सिलाई मशीन से सिल कर अपने परिधान तैयार करती थी। परिवार के सभी पुरूषों के पश्चात ही महिलाऐं भोजन ग्रहण करती थी। परन्तु आज मोबाईल से ग्रामीण महिलाओं की जीवन शैली में काफी बदलाव आ गया है। खान–पान, रहन–सहन, सामाजिक परम्पराऐं, त्यौहारों, प्रथाएँ, पहनावा, आभूषणों इत्यादि सभी में ग्रामीण महिलाएँ बदल रही है। मोबाईल के प्रभाव से ग्रामीण महिलाओं में षिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में चेतना जागृत हुई है। परन्तु आज मोबाईल युग में भी ग्रामीण महिलाऐं गरीबी, शोषण, बेरोजगारी, लैंगिक विभेद, दहेज हत्या, घरेलु हिंसा आदि की षिकार हो रही हैं। मोबाईल के कारण सोषल मीडिया में गलत जानकारियां, झुठ, अफवाहें, पक्षपाती एवं भ्रामक विचार, ग्रामीण महिलाओं का गलत चित्रांकन भी बड़ी तेजी से फैल रहा है। अतः ग्रामीण महिलाओं की नकारात्मक छवि को खत्म करने के लिए अभी और प्रयास करने की आवष्यकता है।

मुख्य शब्द– लैंगिक विभेद, दहेज हत्या, घरेलु हिंसा, नकारात्मक छवि, सामाजिक प्रतिबन्ध, टोकरी, बिजणा आदि।

ग्रामीण महिलाओं की जीवन शैली में मोबाईल के प्रभाव से अनेक बदलाव आये हैं। ग्रामीण महिलाऐं केवल उपभोग की वस्तु समझी जाती थी, आज मोबाईल के प्रभाव से जागरुक होकर अपने अधिकारों की मांग करने लगी हैं। मोबाईल ने ग्रामीण महिलाओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से प्रभावित किया है। आज जनसंचार साधनों का इतना सषक्त प्रभाव है कि उसकी छोटी से छोटी पहल हमारे व्यक्तिगत, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू को गहरे तक प्रभावित करती है। विकास और परिवर्तन लाने के अनेक कारकों में से एक कारक जनसंचार साधन भी है। जनसंचार साधनों ने समाजीकरण, मनोरंजन, सूचना, विज्ञापन एवं उपभोक्ता व्यवहार आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। जनसंचार साधनों में अन्य साधनों की अपेक्षा मोबाईल लोकप्रियता अधिक है। वर्तमान में यह जनसंचार का सर्वाधिक प्रभावशाली माध्यम बनकर उभरा है। पिछले कुछ दषकों में मोबाईल की उपलब्धता कम थी, परन्तु वर्तमान में आमजन की इस तक पंहुंच आसान है। प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह महिला हो या पुरूष, अमीर हो या गरीब, शिक्षित हो या अशिक्षित, युवा हो या वृद्ध मोबाईल से किसी ना किसी रूप में अवश्य प्रभावित है। ग्रामीण महिलाओं का मोबाईल के प्रति आकर्षण अधिक देखा गया है। मोबाईल ने ग्रामीण महिलाओं की जीवन शैली पर एक अमिट छाप छोड़ी है।

समूचे विश्व में मोबाईल संचार का एक महत्त्वपूर्ण साधन हो गया है। आज मोबाईल समस्त जीवन तंत्र को प्रभावित कर रहा है। प्रत्येक क्षण सामाजिक परिवेश में मान्यताएँ एवं दृष्टिकोण बदल रहे हैं, जिसमें मोबाईल की महत्वपूर्ण भूमिका नजर आ रही है। आज प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन से जुड़े सभी क्षेत्रों संबंधी उपयोगी जानकारी मोबाईल के माध्यम से प्राप्त कर रहा है। भारत की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। जहाँ मोबाईल के बढ़ते प्रभावों से ग्रामीण जनसंख्या भी अछूती नहीं रही है। वहीं ग्रामीण महिलाओं की बदलती जीवन शैली पर प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से मोबाईल के प्रभाव देखने को मिल रहे हैं।

मोबाईल के आने से पहले ग्रामीण महिलाओं का जीवन परिवार पर ही केन्द्रित था। महिलाएँ घर के सभी कामों में निपुण हुआ करती थी। वे विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम, त्यौहार आदि का संचालन स्वयं स्वविवेक से करने में समर्थ थी। वे परिधानों, आभूषणों से सुसज्जित रहती थी। ग्रामीण महिलाएँ स्वयं ही सिलाई मशीन से सिल कर अपने परिधान तैयार करती थी। सिलाई के साथ ही वे कढ़ाई, बुनाई आदि कार्य भी स्वयं करती थी और खाली समय में पतली लकड़ी की टोकरी हाथों से बुनती थी। गाँवों में बिजली न के कारण ग्रामीण महिलाएँ हाथ से पंखा बनाती थी और उसमें सुई एवं धागों से बहुत बारीक कढ़ाई करती थी जिसे बिजणा कहा जाता था। ग्रामीण महिलाएँ खाना भी चूल्हें पर ही बनाती थी। वे मक्के एवं बाजरे की रोटी बनाने में निपुण होती थी। गेहूं की रोटी भी बिना चकला बेलन के बनाती थी, जिसको हाथ की रोटी कहा जाता है।

महिलाएँ परिवार की प्रथाओं एवं परम्पराओं का सतर्कता से पालन करती थी। इनकी वेशभूषा में सिर पर ओढ़नी, कुर्ती एवं सलवार, साड़ी, लहंगा प्रचलन में था। सुहागन महिलाएँ रंग–बिरंगे, चटकीले एवं गोटे लगे वस्त्र पहनती थी तथा विधवा महिलाएँ काला एवं सफेद वस्त्र पहना करती थी। महिलाएँ मनोरंजन लोकगीतों के माध्यम से करती थी साथ ही विभिन्न त्यौहार, पर्व, ऋतुओं और संस्कारों के अवसर पर भी महिलाओं द्वारा गीत गाए जाते थे। ग्रामीण महिलाऐं ढ़ोलक पर घुंघरू पहनकर नृत्य भी करती थी।

ग्रामीण महिलाएँ राजनीति से अनभिज्ञ थीं। वे वोट डालने भी नहीं जाती थीं। सूचना प्राप्ति का एक मात्र साधन रेडियो और अखबार था। महिलाएँ कृषि कार्य स्वयं करती थी। पशुओ ं को पालना, उनका दूध निकालना और खाली समय में दूध से घी बनाना आदि कार्य स्वयं करती थीं। ग्रामीण महिलाओं का पारिवारिक जीवन एवं बाहरी जीवन एक जैसा ही था। वे पर्दे में रहती थी। बाहर की दुनिया जैसे तो उन्होंने कभी भी नहीं देखी। वे यातायात के साधनों से अनभिज्ञ थी, उन्होंने कभी भी ट्रेनों में सफर नहीं किया था। महिलाओं को तेल, साबुन, क्रीम, पाउडर, बिन्दी, लिपस्टिक लाने के लिए पुरूष के साथ की आवश्यकता पड़ती थी।

महिलाओं का रहन–सहन एवं खान–पान

ग्रामीण जीवन में प्रतिदिन प्रयोग में आने वाले भोजन में मक्के की रोटी, जौ एवं बाजरे की रोटी, साग, बाजरे की खीचड़ी आदि प्रमुख थी। ग्रामीण महिलाऐं हाथ की चक्की से आटा स्वयं पीसकर रोटी बनाती थी। साबुत सुखे मसाले हाथ से पीसकर सब्जी में काम लेती थी।

ग्रामीण परिवार

संयुक्त परिवार की प्रथा ग्रामीण समाज की सबसे बड़ी विशेषता रही है। संयुक्त परिवार में माता–पिता और बच्चों के अलावा तीन पीढ़ी तक के व्यक्ति शामिल होते थे। इसका उद्येश्य परिवार में पारस्परिक सहयोग प्रदान करना था। महिलाओं को उच्च एवं सम्मान जनक स्थान प्राप्त था। पर्व, उत्सवों, पूजा–पाठ, धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ, हवन इत्यादि में पति के साथ पत्नी की उपस्थिति अनिवार्य मानी गई है।

संयुक्त परिवार एक सुसंगठित संस्था है। इसमें मुखिया का स्थान महत्वपूर्ण होता है। परिवार के सभी कार्यों में उसकी अनुमति आवश्यक होती है। संयुक्त परिवार में पुत्र का अत्यधिक महत्व होता है। गाँवों में यह धारणा है कि पुत्र होने से ही परिवार का वंश चलता है। पुत्र उत्पन्न करना ही विवाह का मुख्य उद्देश्य माना गया है।

परिवार के सभी सदस्य खाली समय में एक–दूसरे के साथ समय व्यतीत करते थे। महिलाओं के पास सूचनाऐं एवं जानकारी का क्षेत्र सीमित था। वो अपने आस–पड़ोस से बाते करके या घर की औरतों से बाते करके अपना खाली समय व्यतीत करती थी। महिलाओं के बात करने के विषय उनके कपड़ों, आभूषणों आदि से संबंधित होते थे। घर या गांव के बाहर की जानकारी उन्हें घर के पुरूषों से पता चलती थी। महिलाओं के शिक्षा का स्तर बहुत कम था। वे प्राइमरी या माध्यमिक स्तर तक ही शिक्षा ग्रहण करती थी।

ग्रामीण महिलाएँ अधिकतर बीमारियों का इलाज घर पर ही कर लेती थी या फिर किसी बाबा से झाड. फूंक करवा कर मरीज को स्वास्थ्य होने की कामना की जाती थी। ग्रामीण महिलाएँ स्वास्थ्य का संबंध धर्म से जोड़ती थी। चिकन पॉक्स को माता का प्रकोप माना जाता था एंव इस रोग को माता के नाम से ही जाना जाता था।

परिवार के सभी पुरूषों के पश्चात ही महिलाऐं भोजन ग्रहण करती थी। परन्तु आज मोबाईल से ग्रामीण महिलाओं की जीवन शैली में काफी बदलाव आ गया है। खान–पान, रहन–सहन, सामाजिक परम्पराऐं, त्यौहारों, प्रथाएँ, पहनावा, आभूषणों इत्यादि सभी में ग्रामीण महिलाएँ बदल रही है।

सकारात्मक प्रभाव

शिक्षा– महिलाओं को षिक्षा के अधिकार से वंचित रखा गया था। विषेषकर ग्रामीण महिलाऐं तो षिक्षा के बारे में जानती तक भी नहीं थी। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्तर तक के स्कूल होते थे और बालिकाओं को गांव से दूर पढ़ने के लिए नहीं भेजा जाता ऐसे में मोबाईल के माध्यम से ग्रामीण महिलाऐं षिक्षा प्राप्त कर पा रहीं हैं। यू–टयूब चैनल के माध्यम से विषय से संबधी जानकारी हासिल कर रही हैं। महिला स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्राप्त कर रहीं है एवं विभिन्न जागरुकता कार्यक्रमों में भाग लेती है।

आर्थिक विकास– अर्थवयवस्था पर केवल पुरुषों का ही एकाधिकार माना जाता था। महिलाओं द्वारा किये गये कार्यों का कोई मुल्य नहीं आंका जाता था। लेकिन वर्तमान में ग्रामीण महिलाऐं मोबाईल में माध्यम से स्थानीय उत्पादों को बेचने, वित्तीय सेवाओं का उपयोग करने और ऑन–लाईन काम प्राप्त कर अपनी आजीविका के नये अवसर तलाष रही हैं।

सामाजिक संबंध– महिलाओं को घर की चार–दीवारी में कैद रखा जाता था, सहां तक की वे अपने परिवार जनों से भी बात करने की मोहताज रहती थी। मोबाईल के माध्यम से वे परिवार और दोस्तों से सम्पर्क में रहती हैं। सामाजिक अवसरों में शामिल होती हैं एवं अपने समुदाय से जुड़ी रह सकती हैं तथा सामाजिक समर्थन प्राप्त कर सकती हैं।

स्वास्थ्य देखभाल– ग्रामीण महिलाऐं उचित जानकारी के अभाव में अपने स्वास्थ्य के प्रति गंभीर नहीं रहीं हैं। यहां तक की उनका प्रसव भी घर पर ही होता था। मोबाई के प्रभाव से वे स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच बना सकी हैं। डॉक्टर से बात करके अपने स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्राप्त करने लगी हैं।

सुरक्षा– महिलाओं को घर एवं बाहर दोनों ही जगह सुरक्षा की आवष्यकता है। माबाईल के माध्यम से वे आपात स्थिति में सहायता मांग सकती हैं और अपनी सुरक्षा के लिए जानकारी प्राप्त कर सकती हैं।

नकारात्मक प्रभाव

सामाजिक मानदंडों में बदलाव– मोबाईल महिलाओं को नए सामाजिक मानदंडों से अवगत करवाता है। जिसके कारण ग्रामीण महिलाऐं पुरानी पारंपरिक जीवन शैली से दूर होती जा रही हैं। जिससे उन्हें पारिवारिक और सामाजिक दबावों का सामना करना पड़ता है।

लैंगिक असमानता– समाज में अभी भी लैंगिक पूर्वाग्रह और सामाजिक प्रतिबन्ध बने हुऐ हैं। जिसके कारण ग्रामीण महिलाओं द्वारा मोबाईल का उपयोग सीमित है।

घरेलू जिम्मेदारियों में बाधा– मोबाईल का अत्यधिक उपयोग उनको घरेलू कार्यों से दूर कर रहा है। उन पर घरेलू जिम्मेदारियां होती हैं, मोबाईल पर समय बर्बाद करके वे घर के अन्य महत्वपूर्ण कार्यों पर ध्यान केन्द्रित नही कर पाती हैं।

सांस्कृतिक प्रभाव– महिलाएँ परिवार की प्रथाओं एवं परम्पराओं का सतर्कता से पालन करती थी। इनकी वेशभूषा में सिर पर ओढ़नी, कुर्ती एवं सलवार, साड़ी, लहंगा प्रचलन में था। सुहागन महिलाएँ रंग–बिरंगे, चटकीले एवं गोटे लगे वस्त्र पहनती थी। मोबाईल के प्रभाव से ग्रामीण महिलाओं के खान–पान, पहनावे आदि में बदलाव आया है। जिससे उनकी पहचान प्रभावित हुई है।

मानसिक स्वास्थ्य– मोबाईल के प्रभाव के कारण चिंता, अवसाद और अलगाव की भावनाऐं बढ़ती जा रही हैं। जिसके कारण उन्हें घरेलू हिंसा एवं उत्पीड़न आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

साईबर अपराध– ग्रामीण महिलाऐं डिजिटल उत्पीड़न, साईबर क्राईम और ऑन लाईन उत्पीड़न का षिकार हो जाती है। उन्हें स्पैम, हैंकिंग और उनकी अनचाही तस्वीरों को वायरल कर शोषित किया जाता है।

निष्कर्ष

मोबाईल ग्रामीण महिलाओं की जीवन शैली को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। मोबाईल के प्रभाव से ग्रामीण महिलाओं में षिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, विभिन्न सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों में चेतना जागृत हुई है। परन्तु आज मोबाईल युग में भी ग्रामीण महिलाऐं गरीबी, शोषण, बेरोजगारी, लैंगिक विभेद, दहेज हत्या, घरेलु हिंसा आदि की षिकार हो रही हैं। भारत सरकार के बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओं, सुकन्या समृद्धि योजना, दहेज निरोधक कानून आदि प्रयासों के कारण स्थिति अवष्य बदली है। इन योजनाओं की जानकारी मोबाईल के प्रभाव से ही ग्रामीण महिलाओं तक पंहुच पाई हैं। निःसंदेह यह कार्य मोबाईल ने बेखूबी किया है। लेकिन मोबाईल के कारण सोषल मीडिया में गलत जानकारियां, झुठ, अफवाहें, पक्षपाती एवं भ्रामक विचार, ग्रामीण महिलाओं का गलत चित्रांकन भी बड़ी तेजी से फैल रहा है।

ग्रामीण महिलाओं की नकारात्मक छवि को खत्म करने के लिए अभी और प्रयास करने की आवष्यकता है। आज भी अधिकांष ग्रामीण महिलाओं की पंहुच में मोबाईल नहीं है। मोबाईल पर अधिकांष जानकारियां शहरी महिलाओं की हैं। सुदूर गांव के भट्टे पर तपती धूप में गोद में नवजान षिषु को गोद में लिए ईंट थापती बेबस महिला की कहानी कभी भी मोबाईल पर वायरल नहीं होती हैं। अतः ग्रामीण महिलाओं के प्रति जनसाधारण एवं सरकार को और अधिक संवेदनषील होने की आवष्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. लवानिया, एम.एम. – भारतीय महिलाओं का समाजषास्त्र, रिसर्च पब्लिकेषन, जयपुर
2. चोपड़ा, लक्षमेन्द्र – जनसंचार का समाजषास्त्र, आधार प्रकाषन, पंचकूला, हरियाणा
3. जोषी, हेमन्त – सामाजिक बदलाव में रेडियो, मोबाईल, इण्टरनेट, कुरुक्षेत्र, दिसम्बर–2011
4. मधुश्री दास, गुप्ता, चटर्जी – सोषल मीडिया महिलाओं के सषक्तिकरण का साधन, योजना, मई–2013
5. शुक्ल, डॉ. भावना – डॉ. अम्बेडकर : महिला सषक्तिकरण के उद्घोषक, सामाजिक न्याय संदेष, अप्रेल–2015
6. पराख, जवरीमल – जनसंचार के सामाजिक संदर्भ,अनामिका पब्लिषर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली, 2004
7. शर्मा ए., और वर्मा आर. – ग्रामीध भारत में डिजिटल क्रांति, आईईईई जर्नल ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड सोसाइटी
8. सिंह, डॉ. निर्मला व ऋषि गौतम – ग्रामीण समाज और संचार : बदलते आयाम, रिगि पब्लिकेषन हाऊस, पंजाब, 2016